

## **“बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्दित करता है” [नीतिवचन 10:1अ] टेड हिल्डेब्रांट द्वारा**

हरी-भरी पहाड़ियों और घने जंगलों के बीच बसे एक देहाती शहर के बाहरी इलाके में ब्रैड नाम का एक आदमी रहता था, जो एक विनम्र बड़ई था और अपने कुशल हाथों और बुद्धिमान दिल के लिए जाना जाता था। ब्रैड का एक बेटा था, हेनरी, एक युवा लड़का जिसकी आँखें रचनात्मकता से चमकती थीं।

छोटी सी उम्र से ही हेनरी अपने पिता के साथ कार्यशाला में रहता था, उनकी छेनी के हर स्ट्रोक और लकड़ी की नक्काशी के हर खांचे को आत्मसात करता था। ब्रैड गर्व से देखता था कि कैसे उसके बेटे के हाथ स्थिर होते गए और अपने शिल्प की समझ बढ़ती गई।

जैसे-जैसे हेनरी बड़ा होता गया, उसकी बुद्धि भी बढ़ती गई। वह अपने पिता की कहानियों को ध्यान से सुनता था, न केवल बड़ईगरी की कला सीखता था, बल्कि धैर्य, दृढ़ता, सटीकता और अच्छी तरह से किए गए काम के मूल्यों को भी सीखता था। ब्रैड अक्सर अपने बेटे के विकसित होते कौशल पर आश्चर्यचकित होता था।

एक गर्मियों की शाम, जब सुनहरा सूरज क्षितिज के नीचे डूब रहा था, ब्रैड अपने साधारण घर के बरामदे पर बैठा था, उसके होठों पर एक थकी हुई मुस्कान थी। हेनरी अपनी आँखों में उत्साह की चमक के साथ आया।

"पिताजी," हेनरी ने शुरू किया, "मेरे पास एक नए डिज़ाइन का विचार है। एक ऐसी मेज जो न केवल अपने उद्देश्य को पूरा करती है बल्कि लकड़ी के एक टुकड़े से आकार लेती है।" उत्सुकता से, ब्रैड ने सिर हिलाया, अपने बेटे को अपना दृष्टिकोण साझा करने के लिए आमंत्रित किया। हेनरी ने जब यह बात कही, तो उनके शब्दों ने सुंदरता और सरलता की एक तस्वीर उकेरी, प्रत्येक विवरण पर सावधानीपूर्वक विचार किया गया, प्रत्येक मोड़ उनके परिवार की लकड़ी पर काम करने की शैली के लिए विशिष्ट अर्थ से ओतप्रोत था।

ब्रैड की विशेषज्ञता और हेनरी की रचनात्मकता के साथ, जब उन्होंने डिज़ाइन को जीवंत किया तो कार्यशाला ऊर्जा से भर गई।

दिन हफ्तों में बदल गए और हफ्ते महीनों में, लेकिन न तो पिता और न ही बेटा थके, हर गुज़रते दिन के साथ उनका रिश्ता मज़बूत होता गया।

अंत में, उनके सामने एक उत्कृष्ट कृति खड़ी थी - लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनी एक चिकनी व्यापक आकृति से सजी एक मेज़ जो उनके पिता/पुत्र की अनूठी शैली को दर्शाती थी। ब्रैड की आँखें गर्व से चमक उठीं जब उसने अपनी रचना को देखा, लेकिन उससे भी ज़्यादा, उसने अपने दिल में एक गहरी खुशी महसूस की - एक ऐसी खुशी जिसे केवल एक पिता ही जान सकता है।

सालों बीत गए और ब्रैड और हेनरी की शिल्पकला की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। उनकी कार्यशाला उन लोगों के लिए एक अभयारण्य बन गई जो न केवल लकड़ी के फर्नीचर की तलाश में थे, बल्कि अपनी अनूठी पारिवारिक जीवनी से जुड़ी कला का एक टुकड़ा भी चाहते थे।

एक ठंडी शरद ऋतु के दिन, जब पत्ते हवा में नाच रहे थे और हवा में ताज़ी लकड़ी की छीलन की खुशबू फैली हुई थी, --

ब्रैड एक बार फिर अपने घर के बरामदे पर खड़ा था, उसके चेहरे पर एक संतुष्ट मुस्कान थी। उसके बगल में हेनरी खड़ा था, अब उसकी आँखों में वही धैर्य, दृढ़ता और संतुष्टि थी जो उसके पिता के दिल में हमेशा से थी।

"पिताजी," हेनरी ने शांत चुप्पी तोड़ते हुए कहा, "मुझे न केवल बढ़ईगीरी की कला बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाने के लिए धन्यवाद।" ब्रैड का दिल खुशी से भर गया जब उसने अपने बड़े बेटे को देखा।

और इस तरह, उनके घर के शांत आलिंगन में, लकड़ी में उकेरे गए प्यार और यादों से घिरे हुए, "एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को खुशी देता है" [नीतिवचन 10: 1 ए] की कालातीत कहावत सत्य एक बार फिर से जीवन में आ गई।